शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 72 – 73

महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में भारतीय ज्ञान परम्परा की झलक

जयश्री सिंह
शोधार्थी
हिंदी विभाग, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. अनुपमा वंदना
सहायक प्राध्यापक एवं शोध निर्देशिका
हिंदी विभाग, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

Received– 27June - 2026
Accepted-29 June- 2026
Published– 30 June 2026
Corresponding Author-
जयश्री सिंह - शोधार्थी
हिंदी विभाग, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

DOI-https://doi.org/10.67275/SU.2026.041419

Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।
Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।

OPEN ACCESS
Shodh Utkarsh
CC-BY 4.0

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी परम्पराओं में से एक है। यह केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के समस्त पक्षों — सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, शैक्षिक और मानवीय मूल्यों — को अपने भीतर समाहित करती है। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन दर्शन, लोक परंपराएँ तथा भारतीय साहित्य इस ज्ञान परंपरा के प्रमुख आधार हैं। भारतीय संस्कृति एक गहन महासागर है, जिसका मंथन करके साहित्य और विचार दोनों प्रकाशमान होते हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा की विशेषता यह है कि यहाँ विभिन्न मतों और विचारों को समान रूप से स्थान दिया गया है। एक ओर उपनिषदों का आध्यात्मिक चिंतन है, तो दूसरी ओर चार्वाक दर्शन का भौतिकवादी दृष्टिकोण भी स्वीकार किया गया है। यह विविधता भारतीय ज्ञान परंपरा को अद्वितीय बनाती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में अनेक कवियों ने भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल तत्वों को अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है। महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान ऐसी ही दो महत्वपूर्ण कवयित्रियाँ हैं, जिनके काव्य में भारतीय सांस्कृतिक चेतना, नारी शक्ति, करुणा, त्याग, संघर्ष और आध्यात्मिकता के विविध स्वर दिखाई देते हैं।

शब्द कुंजी: आध्यात्मिकता, बहुआयामी, समृद्ध, सांस्कृतिक चेतना।

भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल आधार मानव जीवन को सत्य, धर्म, करुणा, प्रेम, कर्तव्य और आत्मबोध की दिशा देना है। यह परम्परा व्यक्ति को केवल भौतिक सुख तक सीमित नहीं रखती, बल्कि आत्मिक उन्नति और लोककल्याण की प्रेरणा देती है।

वेदों में ज्ञान को प्रकाश माना गया है। उपनिषदों में "असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय" के माध्यम से सत्य और प्रकाश की ओर अग्रसर होने का संदेश दिया गया है। भगवद्गीता में कर्मयोग, रामायण में आदर्श जीवन, महाभारत में धर्म और न्याय, तथा बौद्ध दर्शन में करुणा और अहिंसा का स्वर भारतीय ज्ञान परम्परा की आधारशिला हैं।

इसी ज्ञान परम्परा ने भारतीय साहित्य को गहराई और व्यापकता प्रदान की है। साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्यकार अपनी रचनाओं में युगीन चेतना के साथ-साथ सांस्कृतिक मूल्यों को भी अभिव्यक्त करता है।

महादेवी वर्मा के काव्य में भारतीय ज्ञान परम्परा-

हिंदी साहित्य के छायावाद युग की प्रमुख स्तंभ हैं। उन्हें आधुनिक मीरा कहा जाता है। उनके काव्य में करुणा, विरह, वेदना, आध्यात्मिक चेतना तथा आत्मसंघर्ष प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं।

महादेवी वर्मा के साहित्य में भारतीय ज्ञान परम्परा का करुणा तत्व अत्यंत प्रभावशाली रूप में उपस्थित है। उनके काव्य में पीड़ा केवल व्यक्तिगत नहीं है, बल्कि वह समस्त मानवता की पीड़ा बन जाती है। यह भाव भारतीय दर्शन के "वसुधैव कुटुम्बकम्" और सार्वभौमिक संवेदना के विचार से जुड़ा हुआ है।

उनकी प्रसिद्ध कविता "मैं नीर भरी दुख की बदली" में जीवन की वेदना, आत्मसंघर्ष और आंतरिक संवेदनाओं का गहरा चित्रण है। यह भाव भारतीय अध्यात्म में वर्णित आत्मा की यात्रा और जीवन के दुःख-सुख के चक्र से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। महादेवी वर्मा के साहित्य में श्रीराम की करुणा का प्रतिबिंब स्पष्ट दिखाई देता है। राम भारतीय संस्कृति में मर्यादा, धैर्य, त्याग और करुणा

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 72 – 73

के प्रतीक हैं। संस्कृत साहित्यकार भवभूति ने कहा है कि राम के व्यक्तित्व का मूल तत्व करुणा है। यही करुणा महादेवी के काव्य में व्यापक रूप में दिखाई देती है।

उनकी रचनाएँ केवल भावुकता नहीं बल्कि आत्मिक साधना का रूप हैं। यह भारतीय ज्ञान परंपरा की उस धारा का प्रतिनिधित्व करती हैं जहाँ मनुष्य अपने भीतर सत्य की खोज करता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में भारतीय ज्ञान परम्परा-हिंदी साहित्य की ओजस्वी कवयित्री थीं। उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना, नारी शक्ति, संघर्ष, साहस और सामाजिक जागरण के स्वर प्रमुख हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण पक्ष नारी चेतना और सशक्तिकरण है। भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति स्वरूपा माना गया है। देवी दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी भारतीय समाज में शक्ति, ज्ञान और समृद्धि की प्रतीक हैं। उनकी प्रसिद्ध कविता "झाँसी की रानी" भारतीय स्त्री शक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसमें वीरता, स्वाभिमान और राष्ट्रप्रेम का ऐसा स्वर मिलता है जो भारतीय परंपरा के "धर्मरक्षा" और "कर्तव्य पालन" के सिद्धांतों से जुड़ा हुआ है।

उनके काव्य में रामायण की सीता के गुणों की झलक भी स्पष्ट दिखाई देती है। सीता भारतीय संस्कृति में धैर्य, त्याग, मर्यादा, सहनशीलता और आत्मबल की प्रतीक हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी उनका अडिग रहना भारतीय आदर्श नारी स्वरूप को व्यक्त करता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने साहित्य में इन गुणों को आधुनिक नारी चेतना के साथ जोड़ा। उन्होंने स्त्री को केवल परिवार तक सीमित न रखकर समाज निर्माण की सक्रिय शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया।

भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण-दोनों कवयित्रियों के साहित्य में भारतीय संस्कृति के मूल तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं।

महादेवी वर्मा जहाँ करुणा, संवेदना और आत्मिक वेदना के माध्यम से भारतीय आध्यात्मिक चेतना को अभिव्यक्त करती हैं, वहीं सुभद्रा कुमारी चौहान संघर्ष, साहस और कर्म के माध्यम से भारतीय जीवन मूल्यों को सामने लाती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "मेरा बचपन" में माँ-बेटी के वात्सल्य संबंधों का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। भारतीय संस्कृति में परिवार को सामाजिक व्यवस्था की मूल इकाई माना गया है। माँ के स्नेह, संस्कार और पारिवारिक संबंधों की गरिमा इस कविता में स्पष्ट दिखाई देती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा केवल दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला भी है। परिवार, समाज, राष्ट्र और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व इसका अभिन्न अंग है। दोनों कवयित्रियाँ इन मूल्यों को अपने साहित्य में सशक्त रूप में प्रस्तुत करती हैं।

नारी चेतना और भारतीय परंपरा-भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी को सदैव सम्मान दिया गया है। वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने ज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।महादेवी वर्मा ने स्त्री के आंतरिक संघर्ष, संवेदनशीलता और अस्तित्व को अभिव्यक्ति दी। दूसरी ओर सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्त्री की बाहरी शक्ति, साहस और संघर्षशीलता को प्रस्तुत किया।दोनों के साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी केवल करुणा की प्रतीक नहीं बल्कि शक्ति और परिवर्तन की वाहक भी है। आधुनिक समाज में यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है। आज के भौतिकवादी और तकनीकी युग में भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्य कहीं न कहीं कमजोर पड़ते दिखाई देते हैं। ऐसे समय में महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य हमें पुनः करुणा, त्याग, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और नारी सम्मान की शिक्षा देता है।इन दोनों कवयित्रियों का साहित्य आधुनिक पीढ़ी को यह समझाता है कि विकास केवल आर्थिक नहीं बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक भी होना चाहिए। भारतीय ज्ञान परंपरा का संरक्षण साहित्य के माध्यम से संभव है और यही साहित्य समाज को सही दिशा प्रदान करता है।

निष्कर्ष:- अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि और के काव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्व अत्यंत प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। महादेवी वर्मा की विरह-वेदना, करुणा और आध्यात्मिक संवेदना भारतीय दर्शन की करुणा परंपरा से जुड़ी हुई है। वहीं सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में नारी शक्ति, संघर्ष, राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक चेतना भारतीय आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं। दोनों कवयित्रियों के साहित्य में करुणा, त्याग, निष्ठा, साहस, संवेदना और सशक्त नारी चेतना जैसे तत्व भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक साहित्य में जीवंत बनाते हैं। यही इस अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक है।

इस प्रकार महादेवी वर्मा उनकी कविता 'मेरा बचपन' में माँ-बेटी के वात्सल्य भाव का चित्रण भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की निरंतरता को दर्शाता है। इस प्रकार महादेवी वर्मा की विरह-वेदना और सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवन-ऊर्जा दोनों मिलकर भारतीय ज्ञान परम्परा के करुणा, त्याग, निष्ठा और सशक्त नारी-चेतना जैसे मूल तत्वों को आधुनिक साहित्य में जीवंत बनाती हैं। यही इस अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष है।

****

संदर्भ सूची:-

1. वर्मा, महादेवी. (1939). यामा. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. चौहान, सुभद्रा कुमारी. (1930). मुकुल. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन।
3. वाल्मीकि. (2008). श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण. गोरखपुर: गीता प्रेस।
4. व्यास, महर्षि (कृष्ण द्वैपायन). (2007). श्रीमद्भगवद्गीता. गोरखपुर: गीता प्रेस।
5. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. (1929). हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
6. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (1923). भारतीय दर्शन (इंडियन फिलॉसफी का हिंदी अनुवाद). दिल्ली: राजपाल एंड संस।
7. गीता प्रेस. (2015). उपनिषद एवं वेद साहित्य. गोरखपुर: गीता प्रेस।